सामान्य हिन्दी

कारक

" संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका सम्बन्ध क्रिया और दूसरे शब्दों के साथ सूचित किया जाता है, वह "कारक" कहलाता है।

⇒ हिन्दी में मुख्यतः आठ कारक होते हैं। जिनका विवरण निम्नवत् है :-

① **कर्ता कारक :** ("ने") → संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया को करने वाले का बोध हो उसे "कर्ता" कारक कहते हैं।

* गीता नृत्य कर रही है। ⇒ गीता "कर्ता कारक" परसर्ग रहित।
* राम ने धनुष पर बाण चढ़ाया। ⇒ "राम ने" कर्ता कारक परसर्ग-सहित।

② **कर्म कारक :** ("को") → जिस व्यक्ति या वस्तु पर क्रिया का फल पड़े।

* रावण को राम ने मारा। कर्मकारक — रावण
* अरुण पुस्तक पढ़ता है। कर्मकारक — पुस्तक

③ **करण कारक :** ("से") कर्ता जिस साधन या उपकरण से क्रिया सम्पन्न करता है, उसे करण कारक कहते हैं।

* माली खुरपी से घास खोद रहा है। (खुरपी)
* मैं रेल से आया हूँ। (रेल)

④ **सम्प्रदान कारक :** (के लिए, से) — जिसके लिए क्रिया की जाय, उसका बोध कराने वाला शब्द "सम्प्रदान कारक" कहते हैं।

* बच्चे के लिए दूध लाओ। (बच्चे के लिए)
* मैं पूजा के लिए फूल लाया हूँ। (पूजा के लिए)

⑤ **अपादान कारक :** [से (अलग होना)] संज्ञा या सर्वनाम का वह रूप जिससे पृथकता (अलग होना) का बोध हो।

* अतुल ने डाल से फूल तोड़ा। (डाल से)
* पतंग बच्चे के हाथ से छूट गई। (हाथ से)

⑥ **सम्बन्ध कारक :** (का, की, के) संज्ञा व सर्वनाम का रूप जिससे वाक्य में आये हुए अन्य व्यक्ति या वस्तु से उसके सम्बन्ध का बोध हो।

* यह रमेश का घर है। (रमेश 'का')
* यह उसकी पुस्तक है। (उस 'की')

KD Job Updates

⑦ <u>अधिकरण कारक</u>: (में, पर) संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया के स्थान का बोध हो।

* <u>गिलास में</u> पानी है।
* पुस्तक <u>मेज पर</u> रखी है।

⑧ <u>सम्बोधन कारक</u>: (हे, ओ, अरे) संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से किसी को पुकारने का ज्ञान हो।

* <u>हे प्रभो!</u> सभी का भला करो।
* <u>अरे रमेश</u>! कहा जा रहे हो।

— निम्न में कारक बताइये? (Home Work)

① खिलौना मेज पर रखा है। ______
② हे राम! कैसा अन्धेर है। ______
③ पेन से क्यू नहीं लिखते? ______
④ कृष्ण ने राम को सारी बात बता दी है। ______
⑤ उसने पेड़ से फल तोड़े हैं। ______
⑥ अरे मित्र! यह क्या हो रहा है। ______
⑦ पथिक पेड़ की छाया में सो गया है। ______
⑧ पुस्तक मेज पर रख दो। ______
⑨ रमेश ने चाय पी ली है। ______
⑩ वह मेरा मित्र है। ______

KD Job Updates

सामान्य हिन्दी

संधि

- स्वर संधि
- व्यंजन संधि
- विसर्ग संधि

स्वर संधि

(i) दीर्घ सन्धि
(ii) यण् सन्धि
(iii) अयादि सन्धि
(iv) वृद्धि सन्धि
(v) गुण सन्धि
(vi) पूर्व रूप संधि

(i) दीर्घ सन्धि: लघु या दीर्घ अ, इ, उ, ऋ के बाद लघु या दीर्घ अ, इ, उ, ऋ आने पर दोनों के स्थान पर दीर्घ स्वर हो जाता है।

अ + अ = आ ⟶ देव + अधिपति = देवाधिपति
अ + आ = आ ⟶ हिम + आलय = हिमालय
आ + अ = आ ⟶ युवा + अवस्था = युवावस्था
आ + आ = आ ⟶ महा + आशय = महाशय
इ + ई = ई ⟶ कवि + ईश = कवीश
इ + इ = ई ⟶ अभि + इष्ट = अभीष्ट
ई + ई = ई ⟶ जानकी + ईश = जानकीश
ई + इ = ई ⟶ लक्ष्मी + इच्छा = लक्ष्मीच्छा
उ + ऊ = ऊ ⟶ सिन्धु + ऊर्मि = सिन्धूर्मि
ऊ + उ = ऊ ⟶ वधू + उर्मि = वधूर्मि
ऋ + ऋ = ऋ ⟶ पितृ + ऋण = पितृण

(ii) यण सन्धि: लघु या दीर्घ इ, उ, ऋ के उपरांत कोई असमान स्वर आये तो ई, उ, ऋ के स्थान पर क्रमशः य, र, व हो जायेगा

इ + अ = य ⟶ यदि + अपि = यद्यपि
ई + अ = य ⟶ देवी + अर्पण = देव्यर्पण
इ + आ = या ⟶ अति + आचार = अत्याचार
ई + आ = या ⟶ देवी + आलय = देव्यालय
इ + उ = यु ⟶ प्रति + उपकार = प्रत्युपकार
इ + ऊ = यू ⟶ प्रति + ऊष = प्रत्यूष
ई + ऊ = यू ⟶ वाणी + ऊर्मि = वाण्यूर्मि
ऊ + ई = वी ⟶ वधू + ईर्ष्या = वध्वीर्ष्या

उ + अ = व ⟶ अनु + अय = अन्वय
ऊ + अ = व ⟶ वधू + अर्थ = वध्वर्थ
उ + आ = वा ⟶ मधु + आलय = मध्वालय
ऊ + आ = वा ⟶ वधू + आगमन = वध्वागमन
ऋ + अ = र ⟶ मातृ + अर्थ = मात्रार्थ
ऋ + आ = रा ⟶ पितृ + आज्ञा = पित्राज्ञा

KD Job Updates

(3) **अयादि सन्धि:** जब ए, ऐ, ओ, औ के बाद कोई भी स्वर आये तो,
ए → अय्, ऐ → आय्, ओ → अव्, औ → आव्

ए + अ = अय् → ने + अन = नयन
ऐ + अ = आय् → नै + अक = नायक
ओ + अ = अव् → भो + अन = भवन
औ + अ = आव् → पौ + अक = पावक

(4) **वृद्धि सन्धि:** जब लघु या दीर्घ 'अ' के बाद ए, ऐ, ओ, औ आए तो
ए → ऐ, ऐ → ओ, औ → औ हो जाता है।

अ + ए = ऐ → परम + ऐश्वर्य = परमैश्वर्य
आ + ए = ऐ → तथा + एव = तथैव
आ + ऐ = ऐ → महा + ऐश्वर्य = महैश्वर्य
अ + ऐ = ऐ → धर्म + ऐक्य = धर्मैक्य
अ + ओ = औ → जल + ओक = जलौक
अ + औ = औ → जल + औषधि = जलौषधि
आ + ओ = औ → महा + ओज = महौज
आ + औ = औ → महा + औदार्य = महौदार्य

(5) **गुण सन्धि:** 'अ' या 'आ' के बाद लघु या दीर्घ इ, उ, ऋ आये तो दोनों के स्थान पर क्रमश: (ए), (ओ), (अर्) हो जाता है।

अ + इ = ए → देव + इन्द्र = देवेन्द्र
आ + इ = ए → महा + इन्द्र = महेन्द्र
अ + ई = ए → परम + ईश्वर = परमेश्वर
आ + ई = ए → महा + ईश्वर = महेश्वर
अ + उ = ओ → पर + उपकार = परोपकार
आ + उ = ओ → महा + उत्सव = महोत्सव
आ + ऊ = ओ → गंगा + ऊर्मि = गंगोर्मि
अ + ऋ = अर् → देव + ऋषि = देवर्षि
आ + ऋ = अर् → राजा + ऋषि = राजर्षि

(6) **पूर्वरूप सन्धि:** 'अ', 'ए' या ओ के बाद आये तो 'अ' के स्थान पर पूर्व रूप का चिन्ह "ऽ" हो जाता है। लोको + अयम = लोकोऽयम्, हरे + अव = हरेऽव
हरे + अत = हरेऽत, प्रभो + अवतू = प्रभोऽवतू

"अलंकार"

①

"अलंकरोति इति अलंकार:" – जो अलंकृत करे, उसे अलंकार कहते हैं।

अलंकार

↓ शब्दालंकार | ↓ अर्थालंकार

शब्दालंकार

जहाँ शब्दों के कारण कविता में सौन्दर्य या चमत्कार आ जाता है, उसे शब्दालंकार कहते हैं।

* प्रमुखत: चार प्रकार के होते हैं।

अनुप्रास, यमक, श्लेष, वक्रोक्ति

अर्थालंकार

शब्द के स्थान पर उसके पर्याय या अर्थ के कारण जब कविता में सौन्दर्य /चमत्कार आता है तो अर्थालंकार होता है।

* अर्थालंकार की संख्या अनिश्चित है। प्रमुख निम्नलिखित हैं।

उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, अतिशयोक्ति, संदेह, भ्रान्तिमान, विरोधाभासी।

① **अनुप्रास अलंकार**: किसी पंक्ति के शब्दों में एक ही वर्ण एक से अधिक बार आता है।

eg: चारु-चन्द्र की चंचल किरणें खेल रही हैं जल थल में।

(⇒ 'च' वर्ण का आवृत्ति)

② **यमक अलंकार**: एक ही शब्द बार-बार आये परन्तु प्रत्येक स्थान पर उस शब्द का अर्थ भिन्न-भिन्न हो।

eg: कनक कनक ते सौ गुनी मादकता अधिकाई।
वा खावे बौराई नर, या पाये बौराय॥

(कनक → सोना, धतूरा)

③ **श्लेष अलंकार**: जहाँ किसी शब्द के एक से अधिक अर्थ निकले।

'रहिमन' पानी राखिये, बिन पानी सब सून।
पानी गए न ऊबरें, मोती, मानस, चून॥

पानी का अर्थ = मोती के लिए कान्ति, मानस के लिए इज्जत, चूने के लिए जल

④ **वक्रोक्ति**: जहाँ कोई बात किसी अन्य आशय से कही जाये परन्तु श्रोता उसका भिन्न अर्थ लगाये या समझे।

को तुम हो ? इत आए कहाँ ?
'घनश्याम' हैं, तो कितहूँ बरसो।

} राधा जी ने कृष्ण जी से पूछा तुम कौन हो, यहां क्यों आये हो। कृष्ण जी ने कहा मैं 'घनश्याम' हूँ। घनश्याम का अर्थ 'काले बादल" भी होता था तो राधा जी ने कहा यहां क्यू आये हो, कहीं जाकर बरसो।

KD Job Updates

अर्थालंकार

① **उपमा**: "एक वस्तु या व्यक्ति की समानता दूसरे की जाये"
eg: राधा, रति के समान सुन्दर है।

② **रूपक**: जहां उपमेय को उपमान के रूप में दिखाया जाये, वहा रूपक अलंकार होता है। eg: मुख-चन्द्र → मुख ही चन्द्रमा है।

③ **उत्प्रेक्षा**: जहाँ उपमेय में उपमान की संभावना की जाती है, वहा उत्प्रेक्षा अलंकार होता है।
{इसमें → मानो, मानहु, मनहु, मन, जानो, जानहु, जनु, निश्चय, मेरेजान, इव आदि उत्प्रेक्षा वाचक शब्दों का प्रयोग होता है।}

eg: अस कहि कुटिल भई उठि ठाढ़ी।
(मानहुँ) रोष-तरंगिनी बाढ़ी।

④ **अतिशयोक्ति**: किसी व्यक्ति या वस्तु का बढ़ाचढ़ा कर वर्णन किया जाये, अथवा सीमा के बाहर तक की बात की जाये।
eg: बांधा था विधु को किसे इन काली जंजिरों से।
(काली जंजिरों → केश/बाल)
मणिवाले फणियों का मुख, क्यों भरा हुआ था हीरों से।
(फणियों → प्रिया/प्रेमिका की मोती भरी मांग; मुख → चन्द्रमा)

⑤ **संदेह अलंकार**: किसी वस्तु को देखकर संदेह बना रहे, और निश्चय न हो सके। eg: सारी बीच नारी है, कि नारी बीच सारी है,
कि सारी ही की नारी है, कि नारी ही सारी है।

⑥ **भ्रांतिमान (भ्रम) अलंकार**: जहां समानता के कारण किसी वस्तु में (उपमेय) अन्य वस्तु का (उपमान का) भ्रम हो जाये।

eg: पांय महावर देन को नाइन बैठी आय।
पुनि-पुनि जान महावरी एड़ी मोड़ति जाय॥
} एड़ी की लालिमा का महावर से भ्रम

⑦ **विरोधाभास**: जब दो विरोधी पदार्थों का संयोग एक साथ दिखाया जाय, तब विरोधाभास अलंकार होता है।

eg: सुलगी अनुराग की आग वहाँ,
जल से भरपूर तड़ाग जहां॥
} जल और आग में विरोधाभास है

KD Job Updates

16 ———— 12 = 28
16 ———— 12 = 28
16 ———— 12 = 28
16 ———— 12 = 28

15 ———— 13 = 28
15 ———— 13 = 28

KD Job Updates

उदाहरण – रेखा

(2)

षष्ठी / सम्बन्ध (का, की, के)

- गंगाजल — गंगा का जल
- समाजोद्धार — समाज का उद्धार
- सूर्योदय — सूर्य का उदय
- त्रिपुरारि — त्रिपुर का अरि

सप्तमी / अधिकरण (में, पर)

- कविश्रेष्ठ — कवियों में श्रेष्ठ
- नराधम — नरों में अधम
- पुरुषोत्तम — पुरुषों में उत्तम
- आत्मनिर्भर — आत्म पर निर्भर

③ **कर्मधारय समास** : समास के पदों में उपमेय – उपमान अथवा विशेष्य – विशेषण का सम्बन्ध होता है।

नीलाम्बर – नीला है अम्बर जो, पीतसागर – पीत है सागर जो

* नीलोत्पल, सन्मार्ग, महात्मा, परमेश्वर, महाकाव्य, महौषध, सत्संगति, महर्षि, श्वेतपत्र, नीलकमल, नराधम, चरमसीमा, नीलाकाश

④ **द्विगु समास** : प्रथम पद संख्यावाचक, उससे समूह का बोध होता है।

पंचपात्र – पांच पात्रों का समाहार, नवरत्न : नौ रत्नों का समाहार

* पंचरत्न, नवग्रह, त्रिफला, त्रिभुवन, सतसई, त्रियुगी, अष्टपदी, चतुर्वर्ण

⑤ **बहुव्रीहि समास** : तीसरे पद की प्रधानता होती है, अर्थात अर्थ भिन्न होता है।

लम्बोदर – लम्बा है जिनका उदर (गणेश जी)

चतुर्भुज – चार है भुजाये जिसकी (विष्णु भगवान)

* चन्द्रशेखर (शिव भगवान), वीणापाणि (माँ सरस्वती), गिरिधर (श्री कृष्ण), सहस्राक्ष (इन्द्र देव), दशमुख (रावण), जलज (कमल)

⑥ **द्वंद समास** : "दो जोड़ा" या "युग्म" या जिनके बीच "और" तथा "या" का विलोप होजाता है।

- राम लक्ष्मण – राम और लक्ष्मण
- रामकृष्ण – राम और कृष्ण
- पितरों – माता और पिता
- लवकुश – लव और कुश
- धर्माधर्म – धर्म और अधर्म
- हरिशंकर – हरि और शंकर
- धनुर्बाण – धनुष और बाण

* माता-पिता, सीता-राम, राधा-कृष्ण, दाल-रोटी, पाप-पुण्य, घास-फूस, भला-बुरा, रात-दिन

KD Job Updates

"छन्द"

" मात्रा तथा वर्ण आदि के विचार से होने वाली वाक्य रचना को छन्द कहते हैं।"

छन्द = 'पिंगल', छन्दशास्त्र = "पिंगलशास्त्र"

"छन्द"

मात्रिक छन्द

"छन्दों की पहचान केवल मात्राओं के आधार पर की जाती है।"
मात्राओं की समानता और संख्या पर विचार किया जाता है।

eg दोहा, चौपाई, सोरठा आदि

- **सम** — मात्राओं की सं० चारों चरणों में समान ⇓ चौपाई, हरिगीतिका, गीतिका
- **अर्धसम** — प्रथम-तृतीय में तथा द्वितीय-चतुर्थ चरण में सं० समान हो ⇓ दोहा, सोरठा, उल्लाला, बरवै
- **विषम** — चारों चरणों में मात्राओं की सं० असमान हो। ⇓ छप्पय

वार्णिक छन्द

"छन्दों की पहचान के लिए वर्णों के क्रम का विचार किया जाता है। इनमें वर्णों के क्रम, और स्थानादि नियम नियंत्रित रहते हैं।

eg इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा, हरीगीतिका, सवैया आदि।

- **सम** — वर्णों की सं० 4 चरणों में समान ⇓ स्वागता, भुजंगी, शालिनी, इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा
- **अर्धसम** — पहले-तीसरे और दूसरे-चौथे में समान
- **विषम** — चारों चरणों में असमान ⇓ सवैया

① **चौपाई** : प्रत्येक चरण में 16–16 मातायें।
(सममात्रिक)

दीर्घ स्वर/मात्रा = "S" (मान=2)
लघु स्वर/मात्रा = । (मान=1)

बंदउ गुरु पद पदुम परागा। सुरुचि सुबास सरस अनुरागा
S।। ।। ।। ।।। ।SS ।।। ।S। ।।। ।।SS
1+1+1 + 1+1 + 1+1 + 1+1+1 + 1+2+2 = 16 ; 1+1+1 + 1+2+1 + 1+1+1 + 1+1+2+2 = 16

② **दोहा** : (अर्द्धसममात्रिक)

I 13 —— 11 II
III 13 —— 11 IV

13, 11, 13, 11

③ **सोरठा** : (अर्द्धसममात्रिक)

11 —— 11
13 —— 13

11, 11, 13, 13

KD Job Updates

(2) व्यंजन संधि

– दो वर्णों की संधि। पहला वर्ण यदि व्यंजन हो, और दूसरा वर्ण यदि व्यंजन अथवा स्वर हो तो, विकार से व्यंजन संधि होगी।

(1) यदि सकार 'त' वर्ग के साथ सकार या 'च' वर्ग आए तो सकार और त वर्ग के स्थान पर क्रम से सकार और 'च' वर्ग हो जाते हैं।

सत् + चयन = सच्चयन

(2) सकार या त वर्ग + ष् या ट वर्ग = 'ष', 'ट वर्ग'

रामस् + टीकते = रामष्टीकते   बृहत् + टिट्टिभ = बृहट्टिट्टिभ

(3) क्, च्, ट्, त्, प् के पश्चात किसी वर्ग का तीसरा या चौथा वर्ण आये तो, अथवा य, र, ल, व, अथवा कोई स्वर आये तो क्, च्, ट्, प् के स्थान पर अपने ही वर्ग का तीसरा वर्ण हो जाता है।

अच् + अन्त = अजन्त ('ज' (तीसरा वर्ण)) , वाक् + जाल = वाग्जल (ग् (तीसरा वर्ण))

(4) त – द के बाद यदि ल रहे तो त → द में परिवर्तित होगा, और (न्) के पश्चात (ल) रहे तो न् का अनुनासिक के साथ 'ल' हो जायेगा।

उत् + लास = उल्लास

(5) यदि ह्रस्व स्वर के पश्चात छ हो तो छ के पूर्व च जुड़ जाता है।

परि + छेद = परिच्छेद

(6) किसी पद के अंत में 'म' आया हो और उसके बाद कोई व्यंजन वर्ण हो तो उसकी जगह अनुस्वार हो जाता है।

गृहम् + गच्छति = गृहंगच्छति
दु:खम् + प्राप्नोति = दुखंप्राप्नोति
हरिम् + वंदे = हरिवंदे

(3) विसर्ग सन्धि:

विसर्ग (:) + स्वर या व्यंजन का विकार

(1) यदि ':' (विसर्ग) से पहले और बाद में 'अ' हो तो, ':' → "ओ"

अ: + अ = ओ
तेज: + असि = तेजोसि
यश: + अभिलाषी = यशोभिलाषी

KDJob Updates

4

(44) 3 मई 2016 बेंगलुरू में आयोजित 14वें जूनियर फेडरेशन कप नेशनल एथलेटिक्स चैंपियनशिप में महिलाओं की 1500 मी० दौड़ की विजेता:- लिली दास (पश्चिम बंगाल)

(45) UEFA (Union of European Football Association) के अध्यक्ष पद से दिनांक 9 मई 2016 को त्यागपत्र दिया:- माइकल प्लातिनी ने।

(46) 13 मई 2016 को ICC क्रिकेट समिति का अध्यक्ष नियुक्त: ⇒ अनिल कुंबले

(47) BCCI के अध्यक्ष: अनुराग ठाकुर, सांसद (22 मई 2016 को)

(48) ICC के स्वतंत्र अध्यक्ष (Independent Chairman) चुने गये: शशांक मनोहर (12 मई 2016)

(49) FIFA की पहली महिला महासचिव निर्वाचित: फातमा सांबा डियोफ समौरा (सेनेगल की निवासी)

#diwakarspecialclasses

(50) भारत - जिम्बाब्वे T-20 क्रिकेट श्रृंखला (22 जून 2016)
विजेता — भारत (2-1)
मैन आफ द सीरीज - बरींदर सरन

(51) टेस्ट क्रिकेट में 10,000 रन बनाने वाले इंग्लैंड के पहले बल्लेबाज – एलिस्टर कुक (इंग्लैण्ड के कप्तान)
* सबसे कम आयु में बनाकर सचिन तेंदुलकर का रिकार्ड भी तोड़ा।

DiwakarGupta

(52) ग्रैंड चेस टूर टूर्नामेन्ट 2016 → मैग्नस कार्लसन (नार्वे के विश्व चैम्पियन)
* भारत के विश्वनाथन आनंद चौथे स्थान पर रहे।

(53) अन्तर्राष्ट्रीय हाकी महासंघ द्वारा जूनियर पुरुष हाकी विश्व कप के लिए किस स्थान को चुना है:- लखनऊ (उ०प्र०) → 8-18 दिसम्बर 2016

(54) महिला जूनियर विश्व ~~कप~~ हाकी का आयोजन:- सेंटियागो (24 नवम्बर से 4 दिसम्बर 2016)

(55) फ्रेंच ओपन 2016 (16 मई - 5 जून) — पेरिस में खेला गया।
पुरूष एकल — नोवाक जोकोविच (सर्बिया) → * एंडी मरे (ब्रिटेन) उपविजेता
महिला एकल — गार्बिन मुगुरूजा (स्पेन) → सेरेना विलियम्स (USA) उपविजेता
मिश्रित युगल → लिंएडर पेस + मार्टिना हिंगिस, उपविजेता → सानिया मिर्जा + इवान डोडिग

KD Job Updates

समास

① **अव्ययीभाव समास**: समास का पहला पद प्रधान होता है, समासिक पद अव्यय होता है।

सक्षम – आँखों के सामने, यथार्थ – अर्थ के अनुसार, यथारुचि - रुचि के अनुसार

अन्य उदाहरण → आजन्म, यथाविधि, दिनानुदिन, निर्भय, प्रत्यंग, प्रत्यक्ष, परोक्ष, आपादमस्तक, प्रत्युपकार, प्रतिदिन, यथाशक्ति, निर्भय, भरपेट, प्रत्यंग, बेशर्म, बेकार, आजन्म, मनमाना, व्यर्थ, आमरण, यावज्जीवन

② **तत्पुरुष समास**: पहला पद गौण होता है, अंतिम पद की प्रधानता होती है। सामान्यत: प्रथम पद विशेषण और दूसरा पद विशेष्य होता है। तथा दोनों के मध्य कारक (द्वितीया – से – सप्तमीतक) का लोप हो जाता है।

कारक / विभक्ति	समास शब्द	विग्रह
द्वितीया / कर्म तत्पुरुष (को)	गगनचुम्बी	गगन को चूमने वाला
	माखनचोर	माखन को चुराने वाला
	मनोहर	मन को हरने वाला
	गृहागत	गृह को आगत
तृतीया / करण (से)	मदशून्य	मद से शून्य
	दण्डपीड़ित	दण्ड से पीड़ित
	शोकग्रस्त	शोक से ग्रस्त
	श्रमजीवी	श्रम से जीने वाला
चतुर्थी / सम्प्रदान (के लिए)	सभाभवन	सभा के लिए भवन
	गोशाला	गौ के लिए शाला
	मालगोदाम	माल के लिए गोदाम
	लोकहितकारी	लोक के लिए हितकारी
पंचमी / अपादान (से अलग होना)	बलहीन	बल से हीन
	वृक्षपतित	वृक्ष से पतित
	ऋणमुक्त	ऋण से मुक्त
	पदच्युत	पद से च्युत

KD Job Updates

"रस"

(2)

रस	स्थायी भाव
① श्रृंगार →	रति
② हास्य →	हास्य
③ करूण →	शोक
④ वीर →	उत्साह
⑤ रौद्र →	क्रोध
⑥ भयानक →	भय
⑦ वीभत्स →	जुगुप्सा (घृणा)
⑧ अद्भुत →	विस्मय
⑨ शान्त →	निर्वेद (वैराग्य)
⑩ वात्सल्य →	वत्सल
⑪ भक्ति →	भक्ति

राम को रूप निहारति जानकी कंगन के नग की परछाहीं।
याते सबै सुख भूलि गइ कर तेकि रही पल तारति नाहीं॥
— श्रृंगार रस (रति)

जेहि दिसि नारद बैठे फूली। सो दिसि तेहि न बिलोकी भूली।
पुनि-पुनि मुनि उकसहिं अकुलाहीं। देखि दसा हर-गन मुसकाहीं॥
— हास्य रस (हास्य)

[नारद के वानर रूप की कल्पना करके आक्षेप किया गया है।]

पाँय बेहाल बिवाइन सों भये, कंटक-जाल लगे पुनि जोये।
हाय! महादुःख पाये सखा! तुम आये इतै न किते दिन खोये॥
— करूण रस (शोक)

(सुदामा की दयनीय दशा पर कृष्ण जी का चिन्तन)

जय के दृढ़-विश्वास-युक्त थे दीप्तिमान जिनके मुख-मंडल।
पर्वत को भी खण्ड-खण्ड कर रजकण कर देने को चंचल॥
— वीर रस (उत्साह)

माखे लखन, कुटिल भयी भौंहे।
रद-पट फरकत नैन रिसौंहे॥
कहि न सकत रघुबीर डर, लगे बचन जनु बान।
नाइ राम-पद-कमल-जुग, बोले गिरा प्रमान॥
— रौद्र रस (क्रोध)

"अलंकार"

"अलंकरोति इति अलंकारः" – जो अलंकृत करे, उसे अलंकार कहते हैं।

अलंकार
- शब्दालंकार
- अर्थालंकार

शब्दालंकार

जहाँ शब्दों के कारण कविता में सौन्दर्य या चमत्कार आ जाता है, उसे शब्दालंकार कहते हैं।

* प्रमुखतः चार प्रकार के होते हैं।

अनुप्रास, यमक, श्लेष, वक्रोक्ति

अर्थालंकार

शब्द के स्थान पर उसके पर्याय या अर्थ के कारण जब कविता में सौन्दर्य /चमत्कार आता है तो अर्थालंकार होता है।

* अर्थालंकार की संख्या अनिश्चित है। प्रमुख निम्नलिखित हैं।

उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, अतिशयोक्ति, संदेह, भ्रान्तिमान, विरोधाभास।

① **अनुप्रास अलंकार**: किसी पंक्ति के शब्दों में एक ही वर्ण एक से अधिक बार आता है।

उदा: चारु-चन्द्र की चंचल किरणें खेल रही हैं जल थल में।
(→ 'च' वर्ण का आवृत्ति)

② **यमक अलंकार**: एक ही शब्द बार-बार आये परन्तु प्रत्येक स्थान पर उस शब्द का अर्थ भिन्न-भिन्न हो।

उदा: कनक कनक ते सौ गुनी मादकता अधिकाई।
वा खाये बौराई नर, या पाये बौराय॥
(कनक → सोना, धतूरा)

③ **श्लेष अलंकार**: जहाँ किसी शब्द के एक से अधिक अर्थ निकले।

'रहिमन' पानी राखिये, बिन पानी सब सून।
पानी गए न ऊबरें, मोती, मानुस, चून॥

पानी का अर्थ = मोती के लिए कान्ति, मानुस के लिए इज्जत, चून के लिए जल

④ **वक्रोक्ति**: जहाँ कोई बात किसी अन्य आशय से कही जाये परन्तु श्रोता उसका भिन्न अर्थ लगाये या समझे।

को तुम हो? इत आए कहां?
'घनश्याम' हैं, तो कितहूं बरसो।

राधा जी ने कृष्ण जी से पूछा तुम कौन हो, यहां क्यों आये हो। कृष्ण जी ने कहा मैं 'घनश्याम' हूँ। घनश्याम का अर्थ 'काले बादल' भी होता है तो राधा जी ने कहा यहां क्यूं आये हो, कहीं जाकर बरसो।

KD Job Updates

②

"विष्टा पूय रुधिर कच हाडा,
बरषइ कबहुं उपल बहु छाड़ा" } वीभत्स रस (जुगुप्सा)

(वह कभी विष्ठा, खून, बाल और हड्डिया बरसाता था,
और कभी बहुत सारे पत्थर फेंकने लगता था)

"समस्त सर्पों संग श्याम ज्यों कढ़े
कलिंद की नन्दिनी के सु-अंक से।
खड़े किनारे जितने मनुष्य थे;
सभी महा शंकित भीत हो उठे॥" } भयानक रस (भय)

अखिल भुवन चर-अचर जग हरिमुख में लखि मातु।
चकित भयी, गद्गद वचन, विकसित दृग पुलकातु॥ } अद्भुत रस (विस्मय)

समता लहि सीतल भया, मिटी मोह की ताप।
निसि-वासर सुख निधि लह्या, अंतर प्रगट्या आप॥ } शांत रस (निर्वेद)

यशोदा हरि पालने झुलावै।
हरलावै दुलरावै जोइ-सोई कुछ गावै॥ } वात्सल्य रस (वात्सल)

जाको हरि दृढ़ अंग कर्यो।
सोइ सुसील, पुनीत, बेद-बिद बिद्या-गुननि भर्यो॥ } भक्ति रस (भक्ति)

KD Job Updates

(ii) यदि विसर्ग (:) के बाद क, ख, प, फ हो तो विसर्ग (:) का रूप नहीं बदलता।

रज: + कण = रज:कण, पय: + पान = पय:पान

(iii) • विसर्ग (:) + 'च, छ, श' ⟶ 'श'

क: + चित = कश्चित, दु: + शासन = दुश्शासन,

नि: + चल = निश्चल, नि: + छल = निश्छल

(iv) विसर्ग (:) + ट, ठ, ष ⟶ 'ष'

दु: + ट = दुष्ट, न: + ट = नष्ट

(v) विसर्ग (:) से पहले 'इ' या "उ" हो बाद में क, ख, प, या फ, तो विसर्ग (:) ⟶ ष

नि: + काम = निष्काम, नि: + कपट = निष्कपट, नि: + पाप = निष्पाप

(vi) विसर्ग (:) के बाद त, थ, या स हो तो विसर्ग (:) ⟶ स

मन: + ताप = मनस्ताप, नि: + संदेह = निस्सन्देह

- निम्न में संधि बतायें ?

1. अत्यल्प ⟶
2. पावन ⟶
3. दिगम्बर ⟶
4. निष्पाप ⟶
5. वनौषधि ⟶
6. सूर्योदय ⟶
7. आविष्कार ⟶
8. सच्चरित्र ⟶
9. सप्तर्षि ⟶
10. मनोबल ⟶
11. तथैव ⟶
12. गंगोदक ⟶
13. अत्यावश्यक ⟶
14. यशोधरा ⟶
15. तन्मय ⟶

निम्न में संधि विच्छेद बतायें।

1. पुनर्जन्म ________
2. पितृण ________
3. युधिष्ठिर ________
4. सत्कर्म ________
5. तपोवन ________
6. मृत्यूपरांत ________
7. उपर्युक्त ________
8. अन्वेषण ________
9. जगदीश ________
10. रामायण ________
11. उज्ज्वल ________
12. निराहार ________
13. मनोभाव ________
14. स्वागत ________
15. निर्विकार ________

KD Job Updates

③ **अयादि सन्धि:** जब ए, ऐ, ओ, औ के बाद कोई भी स्वर आये तो,
ए → अय्, ऐ → आय्, ओ → अव्, औ → आव्

ए + अ = अय् → ने + अन = नयन
ऐ + अ = आय् → नै + अक = नायक
ओ + अ = अव् → भो + अन = भवन
औ + अ = आव् → पौ + अक = पावक

④ **वृद्धि सन्धि:** जब लघु या दीर्घ 'अ' के बाद ए, ऐ, ओ, औ आए तो
ए → ऐ, ऐ → ओ, औ → औ हो जाता है।

अ + ए = ऐ → परम + ऐश्वर्य = परमैश्वर्य
आ + ए = ऐ → तथा + एव = तथैव
आ + ऐ = ऐ → महा + ऐश्वर्य = महैश्वर्य
अ + ऐ = ऐ → धर्म + ऐक्य = धर्मैक्य
अ + ओ = औ → जल + ओक = जलौक
अ + औ = औ → जल + औषधि = जलौषधि
आ + ओ = औ → महा + ओज = महौज
आ + औ = औ → महा + औदार्य = महौदार्य

⑤ **गुण सन्धि:** 'अ' या 'आ' के बाद लघु या दीर्घ इ, उ, ऋ आये
तो दोनों के स्थान पर क्रमश: (ए), (ओ), (अर्) हो जाता है।

अ + इ = ए → देव + इन्द्र = देवेन्द्र
आ + इ = ए → महा + इन्द्र = महेन्द्र
अ + ई = ए → परम + ईश्वर = परमेश्वर
आ + ई = ए → महा + ईश्वर = महेश्वर
अ + उ = ओ → पर + उपकार = परोपकार
आ + उ = ओ → महा + उत्सव = महोत्सव
आ + ऊ = ओ → गंगा + ऊर्मि = गंगोर्मि
अ + ऋ = अर् → देव + ऋषि = देवर्षि
आ + ऋ = अर् → राजा + ऋषि = राजर्षि

⑥ **पूर्वरूप सन्धि:** 'अ', 'ए' या ओ के बाद आये तो 'अ' के स्थान पर पूर्व रूप का चिन्ह "ऽ" हो जाता है। लोको + अयम = लोकोऽयम्, हरे + अव = हरेऽव
हरे + अत = हरेऽत, प्रभो + अवतु = प्रभोऽवतु

KD Job Updates

अर्थालंकार

②

① **उपमा**: "एक वस्तु या व्यक्ति की समानता दूसरे की जाये"
eg: राधा, रति के समान सुन्दर है।

② **रूपक**: जहां उपमेय को उपमान के रूप में दिखाया जाये, वहां रूपक अलंकार होता है। eg: मुख-चन्द्र → मुख ही चन्द्रमा है।

③ **उत्प्रेक्षा**: जहाँ उपमेय में उपमान की संभावना की जाती है, वहां उत्प्रेक्षा अलंकार होता है।
{इसमें → मानो, मानहु, मनहु, मन, जानो, जानहु, जनु, निश्चय, मेरे जान, इव आदि उत्प्रेक्षा वाचक शब्दों का प्रयोग होता है।}

eg: अस कहि कुटिल भई उठि ठाढ़ी।
मानहुँ रोष-तरंगिनी बाढ़ी।

④ **अतिशयोक्ति**: किसी व्यक्ति या वस्तु का बढ़ाचढ़ा कर वर्णन किया जाये, अथवा सीमा के बाहर तक की बात की जाये।
eg: बांधा था विधु को किसने इन काली जंजीरों से। (काली जंजीरों → केश/बाल)
मणिवाले फणियों का मुख, क्यों भरा हुआ था हीरों से। (फणियों → प्रिया/प्रेमिका की मोती भरी मांग; मुख → चन्द्रमा)

⑤ **संदेह अलंकार**: किसी वस्तु को देखकर संदेह बना रहे, और निश्चय न हो सके। eg: सारी बीच नारी है, कि नारी बीच सारी है,
कि सारी ही की नारी है, कि नारी ही सारी है।

⑥ **भ्रांतिमान (भ्रम) अलंकार**: जहां समानता के कारण किसी वस्तु में (उपमेय में) अन्य वस्तु का (उपमान का) भ्रम हो जाये।

eg: पांय महावर देन को नाइन बैठी आय।
पुनि-पुनि जान महावरी एड़ी मोड़ति जाय॥
} एड़ी की लालिमा का महावर से भ्रम

⑦ **विरोधाभास**: जब दो विरोधी पदार्थों का संयोग एक साथ दिखाया जाय, तब विरोधाभास अलंकार होता है।
eg: सुलगी अनुराग की आग वहाँ,
जल से भरपूर तड़ाग जहां॥
} जल और आग में विरोधाभास है।

KD Job Updates

(ii) यदि विसर्ग (:) के बाद क, ख, प, फ हो तो विसर्ग (:) का रूप नहीं बदलता।

रज: + कण = रज:कण , पय: + पान = पय:पान

(iii) • विसर्ग (:) + च, छ, श → 'श'

क: + चित = कश्चित, दु: + शासन = दुश्शासन,

नि: + चल = निश्चल , नि: + छल = निश्छल

(iv) विसर्ग (:) + ट, ठ, ष → 'ष'

दु: + ट = दुष्ट , न: + ट = नष्ट

(v) विसर्ग (:) से पहले 'इ' या "उ" हो बाद में क, ख, प, या फ, तो विसर्ग (:) → ष

नि: + काम = निष्काम, नि: + कपट = निष्कपट, नि: + पाप = निष्पाप

(vi) विसर्ग (:) के बाद त, थ, या स हो तो विसर्ग (:) → स

मन: + ताप = मनस्ताप, नि: + संदेह = निस्सन्देह

- निम्न में संधि बतायें ?

1. अत्यल्प →
2. पावन →
3. दिगम्बर →
4. निष्पाप →
5. वनौषधि →
6. सूर्योदय →
7. आविष्कार →
8. सच्चरित्र →
9. सप्तर्षि →
10. मनोबल →
11. तथैव →
12. गंगोदक →
13. अत्यावश्यक →
14. यशोधरा →
15. तन्मय →

निम्न में संधि विच्छेद बतायें।

1. पुनर्जन्म ______
2. पितृण ______
3. युधिष्ठिर ______
4. सत्कर्म ______
5. तपोवन ______
6. मृत्यूपरांत ______
7. उपर्युक्त ______
8. अन्वेषण ______
9. जगदीश ______
10. रामायण ______
11. उज्ज्वल ______
12. निराहार ______
13. मनोभाव ______
14. स्वागत ______
15. निर्विकार ______

KD Job Updates

③ **अयादि सन्धि:** जब ए, ऐ, ओ, औ के बाद कोई भी स्वर आये तो,
ए → अय्, ऐ → आय्, ओ → अव्, औ → आव्

ए + अ = अय् → ने + अन = नयन
ऐ + अ = आय् → नै + अक = नायक
ओ + अ = अव् → भो + अन = भवन
औ + अ = आव् → पौ + अक = पावक

④ **वृद्धि सन्धि:** जब लघु या दीर्घ 'अ' के बाद ए, ऐ, ओ, औ आए तो
ए → ऐ, ऐ → ऐ, ओ → औ, औ → औ हो जाता है।

अ + ए = ऐ → परम + ऐश्वर्य = परमैश्वर्य
आ + ए = ऐ → तथा + एव = तथैव
आ + ऐ = ऐ → महा + ऐश्वर्य = महैश्वर्य
अ + ऐ = ऐ → धर्म + ऐक्य = धर्मैक्य
अ + ओ = औ → जल + ओक = जलौक
अ + औ = औ → जल + औषधि = जलौषधि
आ + ओ = औ → महा + ओज = महौज
आ + औ = औ → महा + औदार्य = महौदार्य

⑤ **गुण सन्धि:** 'अ' या 'आ' के बाद लघु या दीर्घ इ, उ, ऋ आये
तो दोनों के स्थान पर क्रमशः (ए), (ओ), (अर्) हो जाता है।

अ + इ = ए → देव + इन्द्र = देवेन्द्र
आ + इ = ए → महा + इन्द्र = महेन्द्र
अ + ई = ए → परम + ईश्वर = परमेश्वर
आ + ई = ए → महा + ईश्वर = महेश्वर
अ + उ = ओ → पर + उपकार = परोपकार
आ + उ = ओ → महा + उत्सव = महोत्सव
आ + ऊ = ओ → गंगा + ऊर्मि = गंगोर्मि
अ + ऋ = अर् → देव + ऋषि = देवर्षि
आ + ऋ = अर् → राजा + ऋषि = राजर्षि

⑥ **पूर्वरूप सन्धि:** 'अ', 'ए' या ओ के बाद आये तो 'अ' के स्थान पर पूर्व रूप का चिन्ह "ऽ" हो जाता है। लोको + अयम = लोकोऽयम्, हरे + अव = हरेऽव
हरे + अत = हरेऽत, प्रभो + अवत् = प्रभोऽवत्

KD Job Updates

सामान्य हिन्दी

कारक

" संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका सम्बन्ध क्रिया और दूसरे शब्दों के साथ सूचित किया जाता है, वह "कारक" कहलाता है।

→ हिन्दी में मुख्यत: आठ कारक होते हैं। जिनका विवरण निम्नवत् है :-

① **कर्ता कारक :** ("ने") → संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया को करने वाले का बोध हो उसे "कर्ता" कारक कहते हैं।

* गीता नृत्य कर रही है। ⇒ गीता "कर्ता कारक" परसर्ग रहित।
* राम ने धनुष पर बाण चढ़ाया। ⇒ "राम ने" कर्ता कारक परसर्ग-सहित।

② **कर्म कारक :** ("को") → जिस व्यक्ति या वस्तु पर क्रिया का फल पड़े।

* रावण को राम ने मारा। कर्मकारक — रावण
* अरुण पुस्तक पढ़ता है। कर्मकारक — पुस्तक

③ **करण कारक :** ("से") कर्ता जिस साधन या उपकरण से क्रिया सम्पन्न करता है, उसे करण कारक कहते हैं।

* माली खुरपी से घास खोद रहा है। (खुरपी)
* मैं रेल से आया हूँ। (रेल)

④ **सम्प्रदान कारक :** (के लिए, से) — जिसके लिए क्रिया की जाय, उसका बोध कराने वाला शब्द "सम्प्रदान कारक" कहते हैं।

* बच्चे के लिए दूध लाओ। (बच्चे के लिए)
* मैं पूजा के लिए फूल लाया हूँ। (पूजा के लिए)

⑤ **अपादान कारक :** [से (अलग होना)] संज्ञा या सर्वनाम का वह रूप जिससे पृथकता (अलग होना) का बोध हो।

* अतुल ने डाल से फूल तोड़ा। (डाल से)
* पतंग बच्चे के हाथ से छूट गई। (हाथ से)

⑥ **सम्बन्ध कारक :** (का, की, के) संज्ञा व सर्वनाम का रूप जिससे वाक्य में आये हुए अन्य व्यक्ति या वस्तु से उसके सम्बन्ध का बोध हो।

* यह रमेश का घर है। (रमेश 'का')
* यह उसकी पुस्तक है। (उस 'की')

KD Job Updates

होमवर्क - समास चिन्हित करे?

1. निर्विवाद ________
2. तुलसीकृत ________
3. नव युवक ________
4. रसोईघर ________
5. चन्द्रभाल ________
6. सुलोचना ________
7. चौराहा ________
8. गुणहीन ________
9. श्यामसुंदर ________
10. जनपद ________
11. भयभीत ________
12. नीलकंठ ________
13. रोग पीड़ित ________
14. प्रतिमान ________
15. वीरपुरुष ________
16. दशानन ________
17. निशाचर ________
18. नीलोत्पल ________
19. पीताम्बर ________
20. चन्द्रमौलि ________
21. राजगृह ________
22. नववधू ________
23. लोकप्रिय ________
24. राजकाज ________
25. प्रतिदिन ________

KD Job Updates